SYLLABUS

Class – B.Com I Years

Subject: - Applied Philosophy of Shri Ramcharit Manas

Unit	Contents
UNIT – I	**Background of Indian Culture15** 1- Spirituality and Religion in root sources of Indian Culture. 2- Description of Four Ages (Yug) in Vedas, Upanishads and Puranas Satyug, Tretayug, Dwaparyug and Kaliyug. 3- In perspective of Prakriti Explanation of Trigunas as Sat, Raj and Tama, Difference between Ramayana and Shri Ramcharltmanas
UNIT – II	**Metaphysics of Manas** 1- Period of Creation of Shri Ramcharit Manas and Introduction of Goswami Tulsidas Ji. 2- Description of Brahman and Jiva, Incarnation of Divine existence in Manas. 3- Different Conditions of Prakriti and Human Mind. 4- Capacity to bear the divine qualities and sign of higher personality
UNIT – III	**Highest Qualities of Human Personality** 1- Amenity (Open Mindness), Decency, Patience, Softness. Sanyamcombined practice of Dharna-Dhyan-Samadhi, Discipline. 2- Fearlessness, Holiness, Bravery, Thoughtfulness, Precious destined insight, Compassion. 3- Renunciation, Devotion towards teacher, Duties of Disciple, Importance of Ayodhya and Affection of Raja Dasharatha towards his son. 4- Shri Ram's Obedience towards his •father and Extreme of Devotion Mahavir Hanuman
UNIT – IV	**Ideal Expressions of Different Emotions** 1- Idol of Friendship, Maxims of Socialism, Natural Beauty and Importance of Environment. 2- Battle — as the last option in Different Policies, Techniques of Battle's Skill. 3- Respect towards existence and presence of different animals and birds. 4- Construction of Bridge as Unique example of Engineering and Raja Ram as a Tapaswi

renaissance
renaissance

भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है। अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ-साथ नष्ट होती रही हैं, किन्तु भारत की संस्कृति आदि काल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई है। इसकी उदारता तथा समन्यवादी गुणों ने अन्य संस्कृतियों को समाहित तो किया है, किन्तु अपने अस्तित्व के मूल को सुरक्षित रखा है। तभी तो पाश्चात्य विद्वान् अपने देश की संस्कृति को समझने हेतु भारतीय संस्कृति को पहले समझने का परामर्श देते हैं।

संस्कृति की विशेषताएँ

भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

प्राचीनता -

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। मध्य प्रदेश के भीमबेटका में पाये गये शैलचित्र, नर्मदा घाटी में की गई खुदाई तथा कुछ अन्य नृवंशीय एवं पुरातत्त्वीय प्रमाणों से यह सिद्ध हो चुका है कि भारत भूमि आदि मानव की प्राचीनतम कर्मभूमि रही है। सिन्धु घाटी की सभ्यता के विवरणों से भी प्रमाणित होता है कि आज से लगभग पाँच हज़ार वर्ष पहले उत्तरी भारत के बहुत बड़े भाग में एक उच्च कोटि की संस्कृति का विकास हो चुका था। इसी प्रकार वेदों में परिलक्षित भारतीय संस्कृति न केवल प्राचीनता का प्रमाण है, अपितु वह भारतीय अध्यात्म और चिन्तन की भी श्रेष्ठ अभिव्यक्ति है। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर भारतीय संस्कृति से रोम और यूनानी संस्कृति को प्राचीन तथा मिस्र, असीरिया एवं बेबीलोनिया जैसी संस्कृतियों के समकालीन माना गया है।

निरन्तरता -

भारतीय संस्कृति की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि हज़ारों वर्षों के बाद भी यह संस्कृति आज भी अपने मूल स्वरूप में जीवित है, जबकि मिस्र, असीरिया, यूनान और रोम की संस्कृतियों अपने मूल स्वरूप को लगभग विस्मृत कर चुकी हैं। भारत में नदियों, वट, पीपल जैसे वृक्षों, सूर्य तथा अन्य प्राकृतिक देवी - देवताओं की पूजा अर्चना का क्रम

शताब्दियों से चला आ रहा है। देवताओं की मान्यता, हवन और पूजा-पाठ की पद्धतियों की निरन्तरता भी आज तक अप्रभावित रही हैं। वेदों और वैदिक धर्म में करोड़ों भारतीयों की आस्था और विश्वास आज भी उतना ही है, जितना हज़ारों वर्ष पूर्व था। गीता और उपनिषदों के सन्देश हज़ारों साल से हमारी प्रेरणा और कर्म का आधार रहे हैं। किंचित परिवर्तनों के बावजूद भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्वों, जीवन मूल्यों और वचन पद्धति में एक ऐसी निरन्तरता रही है, कि आज भी करोड़ों भारतीय स्वयं को उन मूल्यों एवं चिन्तन प्रणाली से जुड़ा हुआ महसूस करते हैं और इससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

लचीलापन एवं सहिष्णुता -

भारतीय संस्कृति की सहिष्णु प्रकृति ने उसे दीर्घ आयु और स्थायित्व प्रदान किया है। संसार की किसी भी संस्कृति में शायद ही इतनी सहनशीलता हो, जितनी भारतीय संस्कृति में पाई जाती है। भारतीय हिन्दू किसी देवी - देवता की आराधना करें या न करें, पूजा-हवन करें या न करें, आदि स्वतंत्रताओं पर धर्म या संस्कृति के नाम पर कभी कोई बन्धन नहीं लगाये गए। इसीलिए प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रतीक हिन्दू धर्म को धर्म न कहकर कुछ मूल्यों पर आधारित एक जीवन-पद्धति की संज्ञा दी गई और हिन्दू का अभिप्राय किसी धर्म विशेष के अनुयायी से न लगाकर भारतीय से लगाया गया। भारतीय संस्कृति के इस लचीले स्वरूप में जब भी जड़ता की स्थिति निर्मित हुई तब किसी न किसी महापुरुष ने इसे गतिशीलता प्रदान कर इसकी सहिष्णुता को एक नई आभा से मंडित कर दिया। इस दृष्टि से प्राचीनकाल में बुद्ध और महावीर के द्वारा, मध्यकाल में शंकराचार्य, कबीर, गुरु नानक और चैतन्य महाप्रभु के माध्यम से तथा आधुनिक काल में स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द एवं महात्मा ज्योतिबा फुले के द्वारा किये गए प्रयास इस संस्कृति की महत्त्वपूर्ण धरोहर बन गए।

ग्रहणशीलता -

भारतीय संस्कृति की सहिष्णुता एवं उदारता के कारण उसमें एक ग्रहणशीलता प्रवृत्ति को विकसित होने का अवसर मिला। वस्तुत: जिस संस्कृति में लोकतन्त्र एवं स्थायित्व के आधार व्यापक हों, उस संस्कृति में ग्रहणशीलता की प्रवृत्ति स्वाभाविक रूप से ही उत्पन्न हो जाती है। हमारी संस्कृति में यहाँ के मूल निवासियों ने समन्वय की प्रक्रिया के साथ ही बाहर से आने

वाले शक, हूण, यूनानी एवं कुषाण जैसी प्रजातियों के लोग भी घुलमिल कर अपनी पहचान खो बैठे।

भारत में इस्लामी संस्कृति का आगमन भी अरबों, तुर्कों और मुग़लों के माध्यम से हुआ। इसके बावजूद भारतीय संस्कृति का पृथक् अस्तित्व बना रहा और नवागत संस्कृतियों से कुछ अच्छी बातें ग्रहण करने में भारतीय संस्कृति ने संकोच नहीं किया। ठीक यही स्थिति यूरोपीय जातियों के आने तथा ब्रिटिश साम्राज्य के कारण भारत में विकसित हुई ईसाई संस्कृति पर भी लागू होती है। यद्यपि ये संस्कृतियाँ अब भारतीय संस्कृतियों का अभिन्न अंग है, तथापि 'भारतीय इस्लाम' एवं 'भारतीय ईसाई' संस्कृतियों का स्वरूप विश्व के अन्य इस्लामी और ईसाई धर्मावलम्बी देशों से कुछ भिन्न है। इस भिन्नता का मूलभूत कारण यह है कि भारत के अधिकांश मुसलमान और ईसाई मूलत: भारत भूमि के ही निवासी हैं। सम्भवत: इसीलिए उनके सामाजिक परिवेश और सांस्कृतिक आचरण में कोई परिवर्तन नहीं हो पाया और भारतीयता ही उनकी पहचान बन गई।

आध्यात्मिकता एवं भौतिकता का समन्वय -

भारतीय संस्कृति में आश्रम - व्यवस्था के साथ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे चार पुरुषार्थों का विशिष्ट स्थान रहा है। वस्तुत: इन पुरुषार्थों ने ही भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता के साथ भौतिकता का एक अदभुत समन्वय कर दिया। हमारी संस्कृति में जीवन के ऐहिक और पारलौकिक दोनों पहलुओं से धर्म को सम्बद्ध किया गया था। धर्म उन सिद्धान्तों, तत्त्वों और जीवन प्रणाली को कहते हैं, जिससे मानव जाति परमात्मा प्रदत्त शक्तियों के विकास से अपना लौकिक जीवन सुखी बना सके तथा मृत्यु के पश्चात् जीवात्मा शान्ति का अनुभव कर सके। शरीर नश्वर है, आत्मा अमर है, यह अमरता मोक्ष से जुड़ी हुई है और यह मोक्ष पाने के लिए अर्थ और काम के पुरुषार्थ करना भी ज़रूरी है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति में धर्म और मोक्ष आध्यात्मिक सन्देश एवं अर्थ और काम की भौतिक अनिवार्यता परस्पर सम्बद्ध है। आध्यात्मिकता और भौतिकता के इस समन्वय में भारतीय संस्कृति की वह विशिष्ट अवधारणा परिलक्षित होती है, जो मनुष्य के इस लोक और परलोक को सुखी बनाने के लिए भारतीय मनीषियों ने निर्मित की थी। सुखी मानव-जीवन के लिए ऐसी चिन्ता विश्व की अन्य संस्कृतियाँ

नहीं करतीं। साहित्य, संगीत और कला की सम्पूर्ण विधाओं के माध्यम से भी भारतीय संस्कृति के इस आध्यात्मिक एवं भौतिक समन्वय को सरलतापूर्वक समझा जा सकता है।

अनेकता में एकता -

भौगोलिक दृष्टि से भारत विविधताओं का देश है, फिर भी सांस्कृतिक रूप से एक इकाई के रूप में इसका अस्तित्व प्राचीनकाल से बना हुआ है। इस विशाल देश में उत्तर का पर्वतीय भू-भाग, जिसकी सीमा पूर्व में ब्रह्मपुत्र और पश्चिम में सिन्धु नदियों तक विस्तृत है। इसके साथ ही गंगा, यमुना, सतलुज की उपजाऊ कृषि भूमि, विन्ध्य और दक्षिण का वनों से आच्छादित पठारी भू-भाग, पश्चिम में थार का रेगिस्तान, दक्षिण का तटीय प्रदेश तथा पूर्व में असम और मेघालय का अतिवृष्टि का सुरम्य क्षेत्र सम्मिलित है। इस भौगोलिक विभिन्नता के अतिरिक्त इस देश में आर्थिक और सामाजिक भिन्नता भी पर्याप्त रूप से विद्यमान है। वस्तुत: इन भिन्नताओं के कारण ही भारत में अनेक सांस्कृतिक उपधाराएँ विकसित होकर पल्लवित और पुष्पित हुई हैं।

अनेक विभिन्नताओं के बावजूद भी भारत की पृथक् सांस्कृतिक सत्ता रही है। हिमालय सम्पूर्ण देश के गौरव का प्रतीक रहा है, तो गंगा - यमुना और नर्मदा जैसी नदियों की स्तुति यहाँ के लोग प्राचीनकाल से करते आ रहे हैं। राम, कृष्ण और शिव की आराधना यहाँ सदियों से की जाती रही है। भारत की सभी भाषाओं में इन देवताओं पर आधारित साहित्य का सृजन हुआ है। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक सम्पूर्ण भारत में जन्म, विवाह और मृत्यु के संस्कार एक समान प्रचलित हैं। विभिन्न रीति-रिवाज, आचार-व्यवहार और तीज - त्यौहारों में भी समानता है। भाषाओं की विविधता अवश्य है फिर भी संगीत, नृत्य और नाट्य के मौलिक स्वरूपों में आश्चर्यजनक समानता है। संगीत के सात स्वर और नृत्य के त्रिताल सम्पूर्ण भारत में समान रूप से प्रचलित हैं। भारत अनेक धर्मों, सम्प्रदायों, मतों और पृथक् आस्थाओं एवं विश्वासों का महादेश है, तथापि इसका सांस्कृतिक समुच्चय और अनेकता में एकता का स्वरूप संसार के अन्य देशों के लिए विस्मय का विषय रहा है।

भारतीय संस्कृति में धर्म है का स्थान

भारत एक ऐसा देश है, जहां धार्मिक विविधता और सहिष्णुता को कानून और समाज दोनों की मान्यता प्राप्त है। भारत के इतिहास में धर्म का संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारत विश्व के चार प्रमुख धार्मिक परंपराओं का जन्मस्थान है- हिन्दू, जैन, बौद्ध और सिख धर्म। भारतीयों की विशाल आबादी किसी न किसी धर्म से संबंधित है। 2001 की जनगणना के अनुसार, भारत की जनसंख्या के 80.5 फीसद लोग हिंदू हैं। इस्लाम 13.5 फीसद, ईसाई धर्म 2.3 फीसद और सिख धर्म 1.9 फीसद। सभी धर्मो के प्रति हिंदू धर्म के अतिथ्य भाव के विषय में नाने हाईन लिखते हैं "हालांकि वर्तमान हिंदू धर्म की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसके द्वारा एक ऐसे गैर हिंदू राज्य की स्थापना करना है जहां सभी धर्म समान हैं"

मौर्य साम्राज्य के समय तक भारत में दो प्रकार के दार्शनिक विचार प्रचलित थे, श्रमण धर्म तथा वैदिक धर्म। इन दोनों परंपराओं का अस्तित्व हजारों वर्षो से साथ-साथ बना रहा है। बौद्ध धर्म और जैन धर्म श्रमण परंपराओं से निकल कर आए हैं, जबकि आधुनिक हिंदू धर्म वैदिक परंपरा का ही विस्तार है।

पारसी और यहूदी धर्म का भी भारत में काफी प्राचीन इतिहास रहा है और हजारों भारतीय अनुसरण करते हैं। भारत की जनसंख्या के 0.2 फीसद लोग बहाई धर्म का पालन करते हैं।

भारत के संविधान में राष्ट्र को एक धर्मनिरपेक्ष गणतंत्र घोषित किया गया है, जिसमें प्रत्येक नागरिक को किसी भी धर्म यह आस्था का स्वतंत्र रूप से पालन तथा प्रचार करने का अधिकार है। भारत के संविधान को एक मौलिक अधिकार की संज्ञा दी गई है।

भारत के नागरिक आमतौर पर एक-दूसरे के धर्म के प्रति काफी सहिष्णुता दर्शाते हैं और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण बनाए रखते हैं। हालांकि अंतर धार्मिक विवाह व्यापक रूप से प्रचलित नहीं है। भारत के सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के अनुसार मुसलमानों के लिए शरियत या मुस्लिम कानून को भारतीय नागरिक कानून के ऊपर वरीयता दी जाएगी। विभिन्न समुदाय के बीच दंगों को सामाजिक मुख्यधारा में अधिक समर्थन प्राप्त नहीं होता है और आमतौर पर यह माना जाता है।

भारत की संस्कृति विश्व की समस्त संस्कृतियों के लिए मार्गदर्षिका है। इस संस्कृति में वह विशेषता है, जो नित्य प्रतिदिन नवीन होती हुई समस्त संस्कृतियों को परिपोषित करती हुई उन्हें मातृत्व का आह्लाद प्रदान कर सकती है। भारत की सनातन संस्कृति न केवल भारतीयों को एकजुट रखने में सामर्थ्यशालिनी है अपितु इस सार्वभौम संस्कृति में संसार के सभी राष्ट्रों को एकसूत्र में बाँधने का परम-तत्त्व भी समाया हुआ है।

इस सनातन संस्कृति के चार मूल-सिद्धान्त हैं जो विश्व-शान्ति का मार्ग प्रशस्त करने में पूर्ण सक्षम है-

1. वसुधैव कुटुम्बकम् - समस्त विश्व एक कुटुम्ब या परिवार है।
2. एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति - सत्य एक है, विद्वान् इसे विभिन्न माध्यमों से कहते हैं।
3. सर्वे भवन्तु सुखिनः - सभी का कल्याण हो, सभी सुखी होवें।
4. यद् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे - जो पिण्ड में है, वही ब्रह्माण्ड में है।

भारतीय संस्कृति का यह वैचारिक/सैद्धान्तिक आधार इतना सुदृढ़ तथा समन्वयकारी है कि यह समस्त विश्व को एकसूत्र में पिरोने की क्षमता रखता है। अध्यात्मिकता, त्याग, सत्य और अहिंसा पर आधारित यह संस्कृति मनुष्य के आचरण को सुधार कर समाज में एकता और बन्धुत्व के भावों का समावेश करती है तथा देश और समाज से लेने की अपेक्षा देने की प्रेरणा देती है।

राष्ट्र-संवर्धन का सबसे प्रबल कार्य संस्कृति की साधना है। उसके लिए बुद्धिपूर्वक यत्न करना आवश्यक है। भारत की संस्कृति की धारा अति प्राचीन काल से बहती चली आयी है, हमें उसका सम्मान करना चाहिए, किन्तु केवल उसके प्राण-तत्त्व को अपनाकर ही हम आगे बढ़ सकते हैं। अपने ही जीवन की उन्नति, विकास और आनन्द के लिए हमें अपनी संस्कृति की सुध अवश्य लेनी चाहिए। संस्कृति की प्रवृत्ति महाफलदायिनी होती है। भारतीय संस्कृति ईश्वर की सर्वव्यापक सत्ता को स्वीकार कर व्यक्ति के व्यक्तित्व मंे त्याग भाव का आरोपण करती है

परमात्मा की स्थिति को निरन्तर अपने साथ समझते हुए, इस संसार में अनासक्त भाव से सांसारिक, विषयों, द्रव्यों एवं पदार्थों आदि का उपभोग करना चाहिए। इन उपभोगों की यथार्थता को जानने का माध्यम भी भारतीय संस्कृति ही है, जो हमें बताती है कि विषयों का उपभोग

करने से कामना कभी भी शान्त नहीं होती अपितु अग्नि में घी के सदृश निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होती रहती है

सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलयु

जैसा कि हम सभी जानते कि सनातन धर्म के अनुसार चार युग होते हैं जैसे कि सतयुग, त्रेता युग, द्वापर युग और कलियुग और अभी का जो युग चल रहा है वह कलयुग। युग का अर्थ होता है कालचक्र या काल अवधि। हिंदू धर्म के अनुसार 3 युग बीत चुके हैं और अभी चौथा युग यानी कि कल युग चल रहा है और समय चक्र के अनुसार जब कलयुग समाप्त हो जाएगा तब फिर सतयुग का आरंभ होगा इसी तरह चारों युग अपने कालचक्र के अनुसार चलते रहते हैं। किसी भी युग का अर्थ होता है कि उस युग में किस प्रकार व्यक्तिगत जीवन, आयु, और उसमे होने वाले मनुष्यों की ऊंचाई, और उस में होने वाले भगवान के अवतारों के बारे में जानना जो युग परिवर्तन के बाद बदल जाते हैं तो चलिए जानते हैं?

सतयुग - प्रथम युग

सनातन धर्म का सबसे प्रथम युग सतयुग है इस युग की बहुत सी विशेषताएं हैं इस युग में पाप की मात्रा 0% होती है यानि की सीधे शब्दों में कहे तो इस युग में पाप की मात्रा ना के बराबर होता है। इस युग यानि कि सतयुग में पुण्य की मात्रा धर्म का 4 भाग यानी कि 100% होती है। मतलब कि इस युग में पुण्य को अधिक महत्व दिया गया है। इस युग में भगवान विष्णु ने मत्स्य, वराह, नर्सिंग, कुर्म जैसे अवतार लिए है यह सभी अवतारों अमानवीय अवतार है। यह सभी अवतार धर्म की रक्षा के लिए राक्षसों का वध करने, वेदों का उद्धार करने और पृथ्वी की रक्षा करने के लिए किया है। इस युग की मुद्रा रत्न की होती थी जैसे- हीरे, मोती, पन्ना,नीलम,पुखराज। इस युग यानी कि सतयुग के बर्तन स्वर्ण धातु के बने होते थे और यह भी माना जाता है कि इस युग में मनुष्य की आयु 100000 वर्ष होती थी और उसकी लंबाई 40 से 45 फीट होते थे। इस युग की आयु 1728000 साल होती है इस युग में सत्य के चारों स्तंभ थे। जब सतयुग की आयु पूर्ण हुई तब आया त्रेता युग चलिए इस युग के बारे में जानते है।

त्रेता युग - दूसरा युग

जब सतयुग समाप्त हो गया तब त्रेता युग का आरंभ हुआ और यह युग सनातन धर्म का दूसरा युग माना जाता है। इस युग में धर्म की मात्रा 75% और पाप की मात्रा 25% होती है जो कि कालचक्र के अनुसार धर्म का 4 में से एक अस्थभ नष्ट हो जाता है इस युग में। इस युग में यानी कि त्रेता युग में भगवान विष्णु ने वामन, परशुराम, और अंतिम में श्री राम के अवतार लिए है। इन अवतारों को लेने का कारण था कि वामन के रूप में राजा बलि का उद्धार करना, परशुराम के रूप में धर्मपथ से भटके हुए दुष्ट क्षत्रियों का नाश करके सबको धर्म पथ पर लाना , श्री राम के रूप में रावण का संहार करके इस समस्त पृथ्वी पर से रावण का आतंक मुक्त करना। इस युग में मनुष्य की आयु 10000 वर्ष रह गई थी और मनुष्यों की लंबाई घटकर 21 फीट तक रह गई थी क्योंकि इस युग से पाप की मात्रा बढ़ने लगी थी। इस युग की मुद्रा स्वर्ण की होती थी और पात्र यानी कि बर्तन चांदी की होती थी और इस युग की आयु 1296000 वर्ष होती है जो समय अनुपात के अनुसार घट जाती है। इसके बाद आता है द्वापर युग

द्वापर युग - तीसरा युग

त्रेता युग की आयु पूर्ण होने पर द्वापर युग की शुरुआत होती है। द्वापर युग को सनातन धर्म का तीसरा युग माना गया है इस युग का तीर्थ स्थल कुरुक्षेत्र है। इस युग में पाप की मात्रा बढ़कर 50 प्रतिशत और पुण्य की मात्रा घटकर 50 प्रतिशत हो जाती है इस युग में धर्म का आधा भाग यानी कि 2 स्तंभ खत्म हो जाता है। इस युग में मनुष्य की आयु घटकर 1000 वर्ष रह गई थी और मनुष्य की लंबाई 10 से 11 फीट रह गई थी। इस युग की मुद्रा चांदी की होती थी और इसके पात्र तांबे के होते थे। इस युग की आयु 864000 वर्ष होती है। इस युग के अंत में भगवान विष्णु ने श्री कृष्ण के रूप ने अवतार लिया था और इस पृथ्वी पर से अधर्म का साम्राज्य मिटाया था और फिर पुनः धर्म का साम्राज्य स्थापित किया। उसके कुछ वर्षों बाद कलयुग की शुरुआत हुई।

कलयुग - चौथा युग

द्वापर युग के समाप्त होने के बाद अर्जुन के पौत्र राजा परीक्षित के शासनकाल में कलयुग की शुरुआत हुई। कलयुग सनातन धर्म का चौथा और अंतिम युग कहा गया है। कलयुग को मानव

जाति के लिए सबसे श्रापित युग भी कहा गया है। इस युग में पाप की मात्रा 75% और पुण्य की मात्रा 25% ही रह जाएगा, इस युग में धर्म का 4 स्तंभ में से 3 स्तंभ खत्म हो जाएगा और धर्म का एक भाग ही रह जाएगा। इस युग यानि कि कलयुग की आयु 432000 साल है। इस युग में मनुष्य की आयु 100 वर्ष और उसकी लंबाई 5 से 6 फीट तक बताई गई है जो कि कलयुग के अंत आते -आते मनुष्य की आयु 10 से 12 वर्ष और इसकी लंबाई 5 से 7 इंच तक ही रह जाएगी, जो कि अभी कलयुग का प्रथम चरण ही चल रहा है।
इस युग के तीर्थ स्थल गंगा नदी है और इस युग की मुद्रा लोहे और कागज की बनी होंगी और इस युग के पात्र मिट्टी का होगा। इस युग अंत में भगवान विष्णु के कल्कि अवतार का जन्म होगा जो कि इस संसार सा अधर्म का विनाश करके पुनः सतयुग की स्थापना करेगा। जैसा कि इस युग का अभी प्रथम चरण ही चल रहा है और कलयुग की शुरुआत द्वापर युग के बाद हुई है तो पुराणों और विशेषज्ञों की गणना के अनुसार कलयुग अभी 5000 वर्ष ही बीते है जो कि अभी कलयुग का अंत आने में 427000 वर्ष और बचे हुए है जो कि कलयुग का अंत आने में भी बहुत समय है तब भगवान विष्णु इस धरा पर अवतरित होंगे। आज के लिए इतना ही अगर आपको पोस्ट अच्छा लगे हो तो शेयर जरूर करें.....।

प्रकृति के तीन गुण सत्व,रजस,तमस की परिभाषा

प्रकृति के तीन गुण से (सत्त्व , रजस् और तमस्) सृष्टि की रचना हुई है । ये तीनों घटक सजीव-निर्जीव, स्थूल-सूक्ष्म वस्तुओं में विद्यमान रहते हैं । इन तीनों के बिना किसी वास्तविक पदार्थ का अस्तित्व संभव नहीं है। किसी भी पदार्थ में इन तीन गुणों के न्यूनाधिक प्रभाव के कारण उस का चरित्र निर्धारित होता है।

सत्वगुण का अर्थ "पवित्रता" तथा "ज्ञान" है। सत्व अर्थात अच्छे कर्मों की ओर मोड़ने वाला गुण खा हे | तीनों गुणों (सत्त्व , रजस् और तमस्) में से सर्वश्रेष्ठ गुण सत्त्व गुण हे सात्विक मनुष्य - किसी कर्म फल अथवा मान सम्मान की अपेक्षा अथवा स्वार्थ के बिना समाज की सेवा

करना ।

सत्त्वगुण दैवी तत्त्व के सबसे निकट है । इसलिए सत्त्व प्रधान व्यक्ति के लक्षण हैं - प्रसन्नता, संतुष्टि, धैर्य, क्षमा करने की क्षमता, अध्यात्म के प्रति झुकाव । एक सात्विक व्यक्ति हमेशा वैश्विक कल्याण के निमित्त काम करता है। हमेशा मेहनती, सतर्क होता है । एक पवित्र जीवनयापन करता है। सच बोलता है और साहसी होता है।

रजस् का अर्थ क्रिया तथा इच्छाएं है। राजसिक मनुष्य - स्वयं के लाभ तथा कार्यसिद्धि हेतु जीना । जो गति पदार्थ के निर्जीव और सजीव दोनों ही रूपों में देखने को मिलती वह रजस् के कारण देखने को मिलती है। निर्जीव पदार्थों में गति और गतिविधि, विकास और ह्रास रजस् का परिणाम हैं वहीं जीवित पदार्थों में क्रियात्मकता, गति की निरंतरता और पीड़ा रजस के परिणाम हैं।

तमस् का अर्थ अज्ञानता तथा निष्क्रियता है। तामसिक मनुष्य - दूसरों को अथवा समाज को हानि पहुंचाकर स्वयं का स्वार्थ सिद्ध करना | तम प्रधान व्यक्ति, आलसी, लोभी, सांसारिक इच्छाओं से आसक्त रहता है ।

तमस् गुण के प्रधान होने पर व्यक्ति को सत्य-असत्य का कुछ पता नहीं चलता, यानि वो अज्ञान के अंधकार (तम) में रहता है। यानि कौन सी बात उसके लिए अच्छी है वा कौन सी बुरी ये यथार्थ पता नहीं चलता और इस स्वभाव के व्यक्ति को ये जानने की जिज्ञासा भी नहीं होती।

रामायण एवं रामचरितमानस में अंतर

महर्षि वाल्मीकि ने युगों पहले मूल रामायण की रचना की थी जिसमें भगवान विष्णु के ७वें अवतार श्रीराम की लीलाओं का वर्णन है। कालांतर में वाल्मीकि रामायण के अनेक भाषाओं में कई संस्करणों (३०० से भी अधिक) की रचना की गयी किन्तु जो प्रसिद्धि एवं सम्मान १६ सदी

में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्री रामचरितमानस को प्राप्त है, उसकी कोई अन्य तुलना नहीं है। आज भी ९०% घरों में वास्तव में रामचरितमानस ही होता है। मानस की तुलना में मूल वाल्मीकि रामायण का प्रसार उतना नहीं है।

इतनी शताब्दियों से हमारे बीच रहने के कारण रामचरितमानस की कहानियाँ जन-जन में व्याप्त है। उसमें वर्णित सभी घटनाओं से हम आत्मीयता से जुड़े हैं। किन्तु यदि एक ग्रन्थ के रूप में देखा जाये तो मानस में ऐसी कई घटनाएं हैं जो मूल वाल्मीकि रामायण से मेल नहीं खाती। उन सभी घटनाओं की परिकल्पना गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी ओर से की। इसी प्रकार रामायण के अन्य संस्करणों में भी बहुत अंतर पाया जाता है। किन्तु चूंकि महर्षि वाल्मीकि ने ही सर्वप्रथम रामायण की रचना की, उसे सबसे शुद्ध माना जाता है।

जब तुलसीदास जी ने मानस की रचना की उस समय मुग़ल हिन्दू धर्म को मिटाने का पूरा प्रयास कर रहे थे। उन्होने उसकी एक प्रति राजा टोडरमल के पास सुरक्षित रखी। रामचरितमानस लिखने से पहले तुलसीदास ने उत्तर और दक्षिण भारत में प्रचलित रामायण के कई अन्य संस्कारणों का अध्ययन किया था, विशेष कर अध्यात्म एवं आनंद रामायण का। यही कारण है कि उनकी रचना में ऐसी कई घटनाएं हैं जो मूल वाल्मीकि रामायण में नहीं है।

वाल्मीकि रामायण एवं रामचरितमानस के घटनाक्रमों में इतना अधिक अंतर है कि उन सभी को समाविष्ट करना तो संभव नहीं है, किन्तु आइये हम कुछ मुख्य अंतरों के विषय में जानते हैं।

- सबसे पहला अंतर तो इन दोनों के अर्थ में है। रामायण का अर्थ है राम की कथा अथवा मंदिर, वहीं रामचरितमानस का अर्थ है राम चरित्र का सरोवर। मंदिर में जाने के कुछ नियम होते हैं इसी कारण वाल्मीकि रामायण को पढ़ने के भी कुछ नियम हैं, इसे कभी भी कैसे भी नहीं पढ़ा जा सकता। इसके उलट रामचरितमानस को लेकर कोई विशेष नियम नहीं है। इसमें एक सरोवर की भांति स्वयं को पवित्र किया जा सकता है।

renaissance

- वाल्मीकि रामायण की भाषा संस्कृत है, वहीं रामचरितमानस की रचना अवधी भाषा में की गयी है।
- रामायण के अनुसार महर्षि वाल्मीकि प्रचेता के १०वें पुत्र थे जबकि गोस्वामी तुलसीदास ने उन्हें रत्नाकर नामक डाकू बताया है जो देवर्षि नारद की प्रेरणा से मरा-मरा कहते हुए रामभक्त बन जाते हैं।
- इन दोनों के कालखंड में भी बड़ा अंतर है। आधुनिक गणना के अनुसार वाल्मीकि रामायण का कालखंड लगभग १४००० वर्ष पूर्व का बताया गया है। कुछ लोग इसे १०-११००० वर्ष पूर्व की भी रचना मानते हैं। हालांकि यदि पौराणिक गणना की बात की जाये तो द्वापर युग के ८६४००० वर्ष एवं वर्तमान कलियुग के लगभग ५००० वर्ष जोड़ने पर इसका कालखंड करीब ८७०००० वर्षों के आस-पास का बनता है। इससे भी अधिक आगे जाएँ तो कई शंकराचार्यों एवं विद्वानों ने ये बताया है कि राम अवतार २७वें श्वेतवाराह कल्प के ७वें वैवस्वत मनु के २४वें त्रेतायुग में हुआ था। उस हिसाब से देखें तो रामायण का कालखंड करीब १ करोड़, ७५ लाख वर्ष पूर्व का बैठता है। वैदिक काल गणना के बारे में विस्तार से यहाँ पढ़ें। दूसरी ओर गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना सन १५७४ में राम नवमी के दिन आरम्भ की और एवं २ वर्ष, ७ मास एवं २६ दिनों के पश्चात सन १५७६ ईस्वी में इसे पूरा किया।
- सबसे बड़ा अंतर जो दोनों ग्रंथों में है वो ये कि वाल्मीकि रामायण के राम मानवीय हैं जबकि रामचरितमानस के राम अवतारी। चूंकि वाल्मीकि श्रीराम के समकालीन थे, उन्होंने श्रीराम का चरित्र सहज ही रखा है। वाल्मीकि के लिए राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, अर्थात पुरुषों में श्रेष्ठ। इसके उलट तुलसीदास के लिए श्रीराम ना केवल अवतारी हैं बल्कि उससे भी ऊपर परब्रह्म हैं। इसका वर्णन मानस में इस प्रकार किया गया है कि जब मनु एवं शतरूपा ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश से वरदान लेने से मना कर देते हैं तो परब्रह्म श्रीराम उन्हें दर्शन देते हैं। तुलसीदास जी इससे भी आगे बढ़ते हुए कहते हैं - "सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू, बिधि हरि हर बंदित पद रेनू। सेवत सुलभ सकल सुखदायक, प्रणतपाल सचराचर नायक।।" अर्थात जिनके चरणों की वन्दना विधि (ब्रह्मा), हरि (विष्णु) और हर (महेश) तीनों ही करते है, तथा जिनके स्वरूप की प्रशंसा

सगुण और निर्गुण दोनों करते हैं: उनसे वे क्या वर माँगें? यह इस बात को दर्शाता है कि तुलसीदास के लिए श्रीराम उन नारायण, जिनके वे अवतार थे, उनसे भी ऊपर हैं।

- महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में सांकेतिक रूप से बताया है कि श्रीराम भगवान विष्णु के अवतार हैं जबकि रामचरितमानस में ना केवल स्पष्ट रूप से, बल्कि बार-बार इस बात पर जोर दिया गया है कि श्रीराम भगवान विष्णु के अवतार हैं।
- रामचरितमानस में दशरथ और कौशल्या को मनु एवं शतरूपा एवं कश्यप एवं अदिति का अवतार बताया गया है जबकि वाल्मीकि रामायण में ऐसा कोई वर्णन नहीं है।
- महर्षि वाल्मीकि श्रीराम के प्रसंशक थे किन्तु उनके आराध्य भगवान शंकर थे जिनकी सहायता से उन्होंने रामायण की रचना की। तुलसीदास श्रीराम के अनन्य भक्त थे और ऐसी मान्यता है कि उन्होंने रामचरितमानस की रचना स्वप्न में भगवान शिव की आज्ञा के बाद की जिसमें रामभक्त हनुमान ने उनकी सहायता की।
- वाल्मीकि रामायण में ऐसा वर्णित है कि वनवास के समय श्रीराम की आयु २७ वर्ष की थी, माता सीता उनसे ९ वर्ष छोटी थी। ऐसा कोई वर्णन रामचरितमानस में नहीं है।
- दोनों ग्रंथों के आकार में भी बहुत बड़ा अंतर है। जहाँ वाल्मीकि रामायण में ६ कांड, ५०० सर्ग एवं २४००० श्लोक हैं, वही रामचरितमानस में ७ कांड एवं १०९०२ दोहे हैं। रामचरितमानस श्लोकों (२७), चौपाईयों (४६०८), दोहों (१०७४), सोरठों (२०७) एवं छंदों (८६) में बंटा है।
- कई लोग उत्तर कांड को वाल्मीकि रामायण का भाग मानते हैं किन्तु ये सत्य नहीं है। वास्तव में ये रामायण का उपसंहार है जो काकभुशुण्डि एवं गरुड़ के बीच के संवाद के रूप में है। इसे उत्तर रामायण कहा गया है, उत्तर कांड नहीं। निकट अतीत में श्रीराम के चरित्र को कलंकित करने हेतु इसमें भारी मात्रा में मिलावट की गयी है और कई भ्रामक जानकारियों को जोड़ा गया है। इसका पता आपको इसे पढ़ कर चल जाएगा क्यूंकि महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचे गए पहले ६ कांड एवं आज के उत्तर कांड की भाषा में जमीन आसमान का अंतर है। इसके विषय में विस्तार से यहाँ पढ़ें। रामचरितमानस के उत्तर कांड में भी एक बड़ा खंड (दोहा क्रमांक ९३ से ११५ तक) काकभुशुण्डि एवं गरुड़ के संवाद के रूप में ही लिखा गया है।

renaissance

- वालमीकि रामायण एवं मानस, दोनों में पहले ५ कांडों का नाम समान है - बाल कांड, अयोध्या कांड, अरण्य कांड, किष्किंधा कांड एवं सुन्दर कांड। पर छठे कांड को महर्षि वाल्मीकि ने युद्ध कांड कहा है जबकि तुलसीदास ने लंका कांड।
- रामचरितमानस में हर कांड "मंगलचरण" के आहवान के साथ आरम्भ होता है। उसी प्रकार मानस के हर कांड का अंत भी तुलसीदास संस्कृत के दोहे के साथ करते हैं जबकि वाल्मीकि रामायण में ऐसा नहीं है।
- वाल्मीकि रामायण में देवी सीता का चरित्र अपने पति के प्रति पूर्ण रूपेण समर्पित एक स्पष्टभाषी दृढ स्त्री का है जो अपने पति से किसी भी प्रकार भी कम नहीं है। वे श्रीराम के साथ वन जाने को एक निर्णय की भांति सुनाती है। रामचरितमानस की सीता भी पूर्ण रूपेण पतिव्रता है किन्तु उन्हें मितभाषी और लज्जापूर्ण बताया गया है जो वन जाने के लिए श्रीराम से आज्ञा मांगती है। श्रीराम की भी भांति मानस में देवी सीता को माता लक्ष्मी से भी अधिक दैवीय बताया गया है।
- रामायण के अनुसार दशरथ की ३५० से भी अधिक पत्नियाँ थी जिनमें कौशल्या, सुमित्रा एवं कैकेयी प्रमुख थी। इसके बारे में श्रीराम के वन गमन के समय कई बार लिखा गया है। अयोध्या कांड के सर्ग ३४, श्लोक १३ में लिखा है - अर्ध सप्त शताः ताः तु प्रमदाः ताम्र लोचनाः। कौसल्याम् परिवार्य अथ शनैः जग्मुर् धृत व्रताः।। अर्थात: देवी कौशल्या के नेतृत्व में महाराज की ३५० रानियाँ अश्रुपूरित नेत्रों के साथ वहाँ पहुंची। इसके उलट रामचरितमानस में दशरथ की केवल तीन ही पत्नियों - कौशल्या, सुमित्रा एवं कैकेयी का ही वर्णन है।
- पुत्रों की प्राप्ति के लिए विभण्डक पुत्र एवं श्रीराम की बड़ी बहन शांता के पति ऋषि ऋष्यश्रृंग से पुत्रेष्टि यज्ञ करवाने का वर्णन भी वाल्मीकि रामायण में है, रामचरितमानस में नहीं।
- वाल्मीकि रामायण के अनुसार श्रीराम के वनगमन के समय दशरथ उनसे कहते हैं वो उन्हें कारागार में डाल दे और फिर राजा बन जाये पर रामचरितमानस में ऐसा कोई वर्णन नहीं है।

renaissance

- रामायण में वनवास के समय महर्षि वशिष्ठ अत्यंत क्रोधित होकर कैकेयी से कहते हैं कि यदि राम वन जाएँ तो सीता को ही सिंहासन पर बिठाया जाये। स्त्री सशक्तिकरण का ये जीवंत उदाहरण है। रामचरितमानस में ऐसा वर्णन नहीं है।
- रामायण के अनुसार भरत को पहले ही दशरथ की मृत्यु का आभास हो गया था। उन्होंने स्वप्न देखा कि दशरथ काले वस्त्र पहने हुए हैं जिनपर पीतवर्णीय स्त्रियां प्रहार कर रही हैं और वे गर्दभों के रथ पर सवार तेजी से दक्षिण दिशा की ओर जा रहे हैं। रामचरितमानस में दशरथ की मृत्यु के बाद उनका समाचार कैकेय देश में भिजवाया जाता है।
- विश्वामित्र द्वारा दशरथ से श्रीराम को माँगने का वर्णन भी रामायण एवं मानस में अलग-अलग है। विश्वामित्र द्वारा राम एवं लक्ष्मण को बला-अतिबला नामक विद्या सहित अनेकानेक सिद्धि प्रदान करना भी वाल्मीकि रामायण में विस्तार पूर्वक बताया गया है जो रामचरितमानस में सतही तौर पर बताया गया है।
- वाल्मीकि रामायण में ऋषि गौतम की पत्नी अहिल्या को अदृश्य हो उसी आश्रम में रहने का श्राप मिला था जबकि रामचरितमानस में वे पत्थर की शिला बन जाती हैं।
- वाल्मीकि रामायण में श्रीराम अहिल्या का उद्धार उनके पैरों को छू कर करते हैं जबकि रामचरितमानस में श्रीराम अपने पैर को अहिल्या की शिला पर रख कर अपनी चरण धूलि से उसका उद्धार करते हैं।
- भारत मिलाप के समय राजा जनक का वहाँ आना और भरत को समझाने का वर्णन भी वाल्मीकि रामायण में है, रामचरितमानस में नहीं।
- रामायण के अनुसार राजा जनक ने सीता स्वयंवर नहीं करवाया था। रामायण में शिव धनुष का प्रदर्शन सार्वजानिक था एवं कोई भी शक्तिशाली व्यक्ति उसे उठाने के लिए स्वतंत्र था। जब महर्षि विश्वामित्र के साथ श्रीराम और लक्ष्मण जनकपुर आये तो राजा जनक ने उन्हें शिव धनुष दिखाया और श्रीराम ने विश्वामित्र की आज्ञा से वो धनुष उठा लिया। तब राजा जनक ने देवी सीता का विवाह श्रीराम से किया। वहीं रामचरितमानस में राजा जनक ने सीता स्वयंवर का आयोजन किया और जब सभी राजा धनुष को उठाने में विफल रहे तब श्रीराम ने उस धनुष को सहज ही उठा कर तोड़ दिया।

renaissance

- वाल्मीकि रामायण में भगवान शंकर के "पिनाक" धनुष का वर्णन है जिसे श्रीराम ने तोडा किन्तु रामचरतिमानस में उसे केवल "शिव धनुष" कहा गया है।
- रामचरितमानस में रावण और बाणासुर के स्वयंवर सभा में आने का किन्तु बिना धनुष छुए चले जाने का वर्णन है जबकि रामायण में ऐसा नहीं है।
- रामचरितमानस में शिव-पार्वती और अन्य देवताओं का रूप बदल कर श्रीराम और सीता के विवाह में आने का वर्णन है जबकि वाल्मीकि रामायण में ऐसा कोई वर्णन नहीं है।
- रामचरितमानस के अनुसार धनुष टूटने पर परशुराम स्वयंवर स्थल में आये और उन्होंने श्रीराम से अपने धनुष पर प्रत्यंचा चढाने को कही। वाल्मीकि रामायण के अनुसार जब श्रीराम विवाह के बाद अयोध्या लौट रहे थे तब मार्ग में उन्हें परशुराम मिले और श्रीराम ने उनका क्रोध शांत करने के लिए उनके वैष्णव धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाई।
- श्रीराम का सीताजी को वाटिका में देखना और फिर देवी सीता द्वारा माता पार्वती की प्रार्थना करना कि श्रीराम ही उन्हें पति के रूप में प्राप्त हों, ये वर्णन केवल रामचरितमानस में मिलता है वाल्मीकि रामायण में नहीं।
- वाल्मीकि रामायण में रावण, कुम्भकर्ण एवं विभीषण की ११००० वर्षों की तपस्या और उनके वरदानों का विस्तार से वर्णन है किन्तु रामचरितमानस में इसके विषय में अधिक वर्णन नहीं है।
- वाल्मीकि रामायण में श्रीराम अपने बल और पराक्रम से खर-दूषण के १४००० योद्धाओं का अंत करते हैं किन्तु रामचरितमानस में वे सम्मोहनास्त्र का प्रयोग करते हैं जिससे वे १४००० सैनिक आपस में युद्ध करते हुए मारे जाते हैं।
- रामचरितमानस में खर-दूषण के संहार के समय ही रावण समझ जाता है कि श्रीराम नारायण के अवतार हैं किन्तु वाल्मीकि रामायण में युद्धकांड में कुम्भकर्ण एवं मेघनाद की मृत्यु के बाद रावण को समझ आता है कि श्रीराम भगवान विष्णु के अवतार हैं।
- वाल्मीकि रामायण में रावण मरीच से दो बार सहायता मांगने आता है। पहली बार मारीच उन्हें श्रीराम की महिमा समझा कर वापस भेज देता है। फिर शूर्पणखा के कहने पर वो पुनः

मारीच के पास आकर उसे विवश करता है। रामचरितमानस में मारीच एक ही बार में मान जाता है ताकि उसे श्रीराम के हाथों मुक्ति मिल सके।

- वाल्मीकि रामायण में देवी सीता श्रीराम से उस स्वर्ण मृग को पकड़ कर लाने बोलती हैं ताकि वे उसे अयोध्या ले जा सके, जबकि रामचरितमानस में सीता उन्हें स्वर्ण मृग का चर्म लाने को बोलती है।
- वाल्मीकि रामायण में मारीच मरते समय लक्ष्मण और सीता दोनों को सहायता के लिए पुकारता है जबकि रामचरितमानस में वो केवल लक्ष्मण को ही पुकारता है।
- वाल्मीकि रामायण के अनुसार लक्ष्मण को पहले ही संदेह हो जाता है कि स्वर्णमृग कोई मायावी राक्षस है जबकि रामचरितमानस में लक्ष्मण केवल इतना कहते हैं कि ये स्वर श्रीराम का नहीं है क्यूंकि उनपर कोई संकट नहीं आ सकता।
- लक्ष्मण रेखा का प्रसंग कितना प्रसिद्ध है ये हम सभी जानते हैं किन्तु इसका वर्णन केवल रामचरितमानस में है, वाल्मीकि रामायण में ऐसा कोई वर्णन नहीं है।
- रामायण में देवी सीता का वास्तव में अपहरण हुआ था। रावण ने उन्हें बलपूर्वक अपने रथ में बिठाया और उन्हें अपहृत कर ले गया। वहीं रामचरितमानस में रावण जिस सीता का अपहरण कर ले गया वो वास्तविक सीता की प्रतिछाया थी। असली सीता को श्रीराम ने उनकी सुरक्षा के लिए अग्निदेव को समर्पित कर दिया था।
- इसी सन्दर्भ में वाल्मीकि रामायण में सीता की अग्नि परीक्षा का कोई प्रसंग नहीं है। उसे बाद में जोड़ा गया था। इसके उलट रामचरितमानस में श्रीराम सीता को अग्नि परीक्षा देने को कहते हैं ताकि उसी अग्नि से वे अपनी असली सीता को प्राप्त कर सकें।
- रामचरितमानस के अनुसार सीता की अग्नि परीक्षा के बारे में उन्होंने लक्ष्मण को तब बताया जब वे सीता की अग्नि परीक्षा के विषय के बारे में सुनकर श्रीराम का प्रतिकार करते हैं। मूल वाल्मीकि रामायण में ऐसा कुछ नहीं होता।
- वाल्मीकि रामायण में जटायु ने रावण का रथ तोड़ दिया और तब वो वायु मार्ग से लंका पहुँचता है। रामचरितमानस में ये प्रसंग नहीं है।

- वाल्मीकि रामायण के अनुसार एक बार रावण ने वेदवती नामक स्त्री को देखा जो श्रीहरि की तपस्या कर रही थी और उसका अपहरण करने का प्रयास किया। तब वेदवती ने उसे ये श्राप दिया कि अगले जन्म में वही उसकी मृत्यु का कारण बनेगी और आत्मदाह कर लिया। तब वेदवती ही सीता के रूप में जन्मी। ऐसा को वर्णन रामचरितमानस में नहीं है।
- रामायण में कुम्भकर्ण के दो बार जागने का वर्णन है। पहले भी वो एक बार रावण को भरी सभा में सीता हरण पर खरी-खोटी सुनाता है और दूसरी बार वो जगकर युद्ध में जाता है जहाँ उसका वध होता है। रामचरितमानस में कुम्भकर्ण केवल एक ही बार जगा है।
- रामचरितमानस में लक्ष्मण को अत्यंत क्रोधी एवं उत्तेजी दिखाया गया है। मानस में वे बात-बात पर क्रोधित होते हैं, स्वयंवर में जनक और परशुराम से उलझ जाते हैं। वाल्मीकि रामायण में उन्हें धीर-गंभीर और विवेकी बताया गया है। मूल रामायण में लक्ष्मण केवल तीन समय पर क्रोधित होते हैं - पहला जब उन्हें श्रीराम के वनवास का समाचार मिलता है, दूसरा जब चित्रकूट में भरत श्रीराम से मिलने आते हैं और तीसरा जब वे सुग्रीव को उसकी प्रतिज्ञा याद दिलाने किष्किंधा पहुँचते हैं।
- रामचरितमानस के अनुसार जब समुद्र सेना को मार्ग नहीं देता तो लक्ष्मण अत्यंत क्रोधित होते हैं और श्रीराम से समुद्र को सुखा देने को कहते हैं जबकि मूल वाल्मीकि रामायण में बिलकुल इसका उल्टा है। रामायण के अनुसार श्रीराम समुद्र पर क्रोधित हुए और उसे सुखा देने को उद्धत हुए और तब लक्ष्मण ने उन्हें समझा-बुझा कर शांत किया।
- रामचरितमानस में श्रीराम को कई बार भगवान शंकर की पूजा करते दिखाया गया है पर वाल्मीकि रामायण में केवल महादेव को श्रीराम का आराध्य बताया गया है।
- वाल्मीकि रामायण के अनुसार श्रीराम जब रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग की स्थापना करते हैं तो हनुमान उनसे रामेश्वरम की व्याख्या करने को कहते हैं। तब श्रीराम केवल इतना कहते हैं कि "जो राम का ईश्वर है वही रामेश्वर है।" रामचरितमानस में भी श्रीराम यही कहते हैं पर उसमें तुलसीदास ने एक प्रसंग और जोड़ा है कि भगवान शंकर भी माता पार्वती से रामेश्वरम की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि "राम जिनके ईश्वर हैं वो रामेश्वरम हैं।"
- वाल्मीकि रामायण में केवट नामक कोई चरित्र नहीं है, ये केवल रामचरितमानस में है।

- निषादराज गुह को भी रामचरितमानस में श्रीराम के साथ भरद्वाज ऋषि के आश्रम में जाते हुए दिखाया गया है जबकि वाल्मीकि रामायण में वे तमसा तट पर ही श्रीराम से मिलते हैं जिसके बाद श्रीराम एकाकी ही आगे बढ़ जाते हैं।
- रामयण में भरद्वाज ऋषि श्रीराम को चित्रकूट में रहने का सुझाव देते हैं जबकि रामचरितमानस में उन्हें ये सुझाव महर्षि वाल्मीकि देते हैं।
- रामचरितमानस में महर्षि अगस्त्य के शिष्य सुतीक्ष्ण ऋषि श्रीराम से उनका आशीर्वाद मांगते हैं जबकि वाल्मीकि रामायण में ऐसा कोई वर्णन नहीं है।
- वाल्मीकि रामायण में हनुमान को मनुष्य बताया गया है जो वानर समुदाय के थे और वन में रहते थे। वानर = वन (जंगल) + नर (मनुष्य) जबकि रामचरितमानस में हनुमान को वानर (बन्दर) प्रजाति का बताया गया है।
- वाल्मीकि रामायण में हनुमान को कहीं भी सीधे तौर पर भगवान शंकर का अवतार नहीं बताया गया है किन्तु रामचरितमानस में उन्हें "शंकर-सुमन" कहा गया है।
- वाल्मीकि रामायण में ऋष्यमूक पर्वत पर हनुमान को जब श्रीराम अपना परिचय देते हैं तब उन दोनों में मित्रता होती है जबकि रामचरितमानस में हनुमान पहले से ही श्रीराम के अनन्य भक्त हैं।
- रामायण में जब लक्ष्मण क्रोध में सुग्रीव के महल पहुँच कर उन्हें धिक्कारते हैं तब सुग्रीव वानरों को माता सीता की खोज में भेजते हैं। रामचरितमानस में सुग्रीव बताते हैं कि वे पहले ही वानरों को सीता की खोज में भेज चुके हैं।
- वाल्मीकि रामायण में जब हनुमान का दल सीता संधान करते हुए थक जाता है तब अंगद के मन में विद्रोह के भाव आते हैं जिसे हनुमान समझदारी से दबा देते हैं। रामचरितमानस में ऐसा कोई प्रसंग नहीं है।
- रामचरितमानस में जब हनुमान लंका पहुँचते हैं तो वे विभीषण से मिलते हैं और वही उन्हें अशोक वाटिका का मार्ग बताते हैं। वाल्मीकि रामायण में ऐसा कोई प्रसंग नहीं है। वहाँ हनुमान स्वयं सारी लंका में खोजते हुए अशोक वाटिका पहुँचते हैं।

- उसी संधान के समय वाल्मीकि रामायण में हनुमान को रावण के महल में मंदोदरी को देख कर उनके सीता होने का भ्रम हो जाता है किन्तु बाद बाद में वे समझ जाते हैं कि ये सीता नहीं है। रामचरितमानस में ऐसा कोई प्रसंग नहीं है।
- रामायण में हनुमान सीता के समक्ष आकर अपना परिचय देते हैं और फिर उन्हें मुद्रिका देते हैं। रामचरितमानस में हनुमान वृक्ष पर से मुद्रिका सीता की गोद में गिरा कर ऊपर से ही राम चरित्र सुनाते हैं और फिर उनके सामने आते हैं।
- वाल्मीकि रामायण में हनुमान देवी सीता से अपने साथ चलने का निवेदन करते हैं किन्तु सीता ये कहते हुए मना कर देती है कि वो जान-बूझ कर पर पुरुष का स्पर्श नहीं कर सकती। इसके अतिरिक्त वे चाहती हैं कि ये श्रेय श्रीराम को मिले। रामचरितमानस में हनुमान कहते हैं कि वे उन्हें साथ ले जा सकते हैं किन्तु श्रीराम की ऐसी आज्ञा नहीं है।
- वाल्मीकि रामायण के अनुसार माता सीता अपनी चूड़ामणि हनुमान को पहले ही दे देती है किन्तु रामचरितमानस में जब हनुमान लंका दहन कर वापस उनके पास आते हैं तब वे उन्हें चूड़ामणि देती है।
- वाल्मीकि रामायण में सभा में अपना अपमान होने के बाद विभीषण स्वयं लंका का त्याग कर देते हैं जबकि रामचरितमानस के अनुसार रावण विभीषण को लात मार कर लंका से निष्काषित कर देता है।
- रामायण में शुक एवं सारण को विभीषण पहचानते हैं और फिर जब श्रीराम आज्ञा देते हैं तब उन्हें छोड़ा जाता है। रामचरितमानस में शुक-सारण को वानर पकड़ते हैं और लक्ष्मण ही उन्हें सन्देश देकर वापस भेजते हैं। बाद में शुक अगस्त्य मुनि से दीक्षा लेकर तपस्वी बन जाता है।
- रामचरितमानस के अनुसार रामसेतु का निर्माण नल एवं नील दोनों ने किया था क्यूंकि उन्हें श्राप मिला था कि उनके हाथ से छुई वस्तु पानी में नहीं डूबेगी। किन्तु वाल्मीकि रामायण में रामसेतु का निर्माण केवल नल ने किया था क्यूंकि वे असाधारण शिल्पी थे और विश्वकर्मा का अंश थे। इसी कारण रामसेतु को "नलसेतु" भी कहा जाता है।

renaissance

- रामचरितमानस में श्रीराम अपने एक बाण से विलास भवन में बैठे रावण का मुकुट एवं मंदोदरी का कर्णफूल गिरा देते हैं। वाल्मीकि रामायण में इसका कोई वर्णन नहीं है।
- रावण के दरबार में अंगद का पैर जमा देना और किसी का उसे ना उठा पाना तथा रावण का मुकुट श्रीराम के पास फेंक देने का वर्णन केवल रामचरितमानस में है, वाल्मीकि रामायण में नहीं।
- वाल्मीकि रामयण के अनुसार रावण और श्रीराम का युद्ध दो बार हुआ था। एक बार रावण युद्ध के आरम्भ में आया था और पराजित होकर गया। दूसरी बार वो युद्ध के अंत में आया और श्रीराम के हाथों मृत्यु को प्राप्त हुआ। रामचरितमानस के अनुसार रावण युद्ध में केवल एक बार अंत समय में आया और वीरगति को प्राप्त हुआ।
- रामचरितमानस के अनुसार रावण इंद्र के रथ के घोड़े एवं सारथि को गिरा देता है जबकि रामायण में ऐसा कोई वर्णन नहीं है।
- रामायण में रावण ने जो शक्ति लक्ष्मण पर चलाई वो उसे मयदानव ने दी थी जबकि रामचरितमानस के अनुसार उसे ये शक्ति ब्रह्मा ने दी थी।
- रामायण में संजीवनी बूटी लाने का दो बार वर्णन है जबकि रामचरितमानस में एक बार।
- कालनेमि द्वारा संजीवनी बूटी लाते समय हनुमान के वध का प्रयास करना एवं हनुमान द्वारा मारे जाने का वर्णन भी केवल रामचरितमानस में है, वाल्मीकि रामायण में नहीं।
- संजीवनी बूटी लाते समय भरत का हनुमान पर बाण चलाना एवं दोनों का संवाद भी केवल रामचरितमानस में है, वाल्मीकि रामायण में नहीं।
- रामायण में मेघनाद के यज्ञ का विध्वंस और उसका वध लक्ष्मण अकेले ही करते हैं किन्तु रामचरितमानस में मेघनाद के यज्ञ का विध्वंस वानर करते हैं।
- रामायण में मेघनाद का वध लक्ष्मण उसका सर काट कर करते हैं जबकि रामचरितमानस में उसका वध लक्ष्मण उसके वक्ष में बाण मार कर करते हैं।
- रामायण में सुषेण वैद्य वानर है जो बाली के श्वसुर एवं तारा के पिता हैं जबकि रामचरितमानस में वो राक्षस हैं जो लंका के वैद्य है।

renaissance

- हनुमान द्वारा सुषेण को उसके निवास सहित उठा कर लाने का वर्णन भी केवल रामचरितमानस में है, वाल्मीकि रामायण में नहीं।
- वाल्मीकि रामायण में इंद्र के सारथि मातलि श्रीराम को बताते हैं कि रावण का वध कैसे संभव है जबकि रामचरितमानस में ये श्रीराम को ये बात विभीषण बताते हैं।
- रावण की नाभि में अमृत होना और उसे श्रीराम द्वारा सुखा देने का वर्णन केवल रामचरितमानस में है, वाल्मीकि रामायण में ऐसा कोई वर्णन नहीं है।
- रामचरितमानस के अनुसार रावण का वध ३१ बाणों द्वारा हुआ जबकि वाल्मीकि रामायण में रावण का वध श्रीराम ने महर्षि अगस्त्य द्वारा प्राप्त ब्रह्मास्त्र से किया।
- श्रीराम के ह्रदय पर उस समय प्रहार करना जब वो सीता का स्मरण ना कर रहा हो, इसका वर्णन भी केवल रामचरितमानस में है, वाल्मीकि रामायण में नहीं।
- श्रीराम के राज्याभिषेक के बाद हनुमान का अपना ह्रदय चीर कर सीता-राम की छवि दिखाने का वर्णन भी केवल रामचरितमानस में है, वाल्मीकि रामायण में नहीं।
- वाल्मीकि रामायण के बाद देवराज इंद्र युद्ध के बाद सभी वानरों एवं रीछों को पुनर्जीवित कर देते हैं जबकि रामचरितमानस में इंद्र अमृत की वर्षा करते हैं जिससे वे पुर्नर्जीवित हो जाते हैं।
- रामचरितमानस में श्रीराम का चमत्कार द्वारा अनेक रूप लेकर अयोध्या वासियों से मिलने का वर्णन है जबकि रामायण में ऐसा कोई प्रसंग नहीं है।
- रामायण के अनुसार ११००० वर्षों तक राज्य करने के बाद श्रीराम माता सीता एवं लक्ष्मण के विरह में सरयू में समाधि लेकर अपनी लीला समाप्त करते हैं। लक्ष्मण पहले ही सरयू में ही डूब कर अपना जीवन समाप्त करते हैं और माता सीता पृथ्वी में समाधि लेती हैं। रामचरितमानस का अंत लव एवं कुश के जन्म के साथ ही हो जाता है। इसमें माता सीता के धरती में समाने और लक्ष्मण की मृत्यु का कोई वर्णन नहीं है।
- रामचरितमानस के बालकाण्ड में सती द्वारा श्रीराम की परीक्षा लेते हुए दिखाया गया है जिस कारण भगवान शंकर उनका त्याग कर देते हैं। इसके विषय में विस्तार से यहाँ पढ़ें। वाल्मीकि रामायण में ऐसा कोई वर्णन नहीं है।

renaissance
renaissance

- रामचरितमानस में भगवान शिव और पार्वती के विवाह का वर्णन करते समय उन्हें श्रीगणेश की पूजा करते हुए दिखाया गया है जो कि अतार्किक है।
- रामचरितमानस में कई देवी-देवताओं को महत्त्व नहीं दिया गया है, विशेषकर इंद्र का बहुत चरित्र हनन किया गया है। वाल्मीकि रामायण में इंद्र और अन्य देवताओं का महत्त्व बताया गया है। कई लोगों को मृत्यु पश्चात इंद्रलोक प्राप्त करने का वर्णन भी है। इंद्र ही सीता को अशोक वाटिका में दिव्य खीर प्रदान करते हैं ताकि उन्हें कभी भूख ना लगे। श्रीराम की सहायता हेतु अंतिम युद्ध में रथ और सारथि मातलि को भी इंद्र ही भेजते हैं। हनुमान को चिरंजीवी होने का वरदान भी इंद्र ही उन्हें देते हैं।

इसके अतिरिक्त कई ऐसी चीजें हैं जिनका वर्णन ना ही वाल्मीकि रामायण में और ना ही रामचरितमानस में किया गया है किन्तु फिर भी वे कई लोक कथाओं के रूप में प्रचलित हैं।

- रामायण या रामचरितमानस में कही भी हनुमान को "रुद्रावतार" नहीं कहा गया है।
- वास्तव में किसी भी वानर अथवा रीछ के पास कोई गदा अथवा अन्य कोई हथियार नहीं था। लंका युद्ध उन्होंने अपने बाहुबल, दांत, नख, पत्थर, पहाड़, शिला, पेड़ इत्यादि द्वारा ही लड़ी थी। पर क्या आज हनुमान जी की कल्पना बिना गदा के की जा सकती है?
- श्रवण कुमार का अपने माता-पिता को कांवड़ में उठा कर यात्रा करने का कोई वर्णन नहीं है। वो अपने पिता के आश्रम में सपरिवार तपस्या करते थे। इसी प्रकार श्रवण कुमार द्वारा कुरुक्षेत्र में अपने माता पिता को पालकी से उतार देने का कोई वर्णन नहीं है। इसके बारे में विस्तार से यहाँ पढ़ें।
- सीता हरण में पुष्पक विमान का प्रयोग नहीं किया गया था।
- शबरी का वर्णन दोनों ग्रंथों में है किन्तु उनके जूठे बेर का वर्णन कही नहीं है।
- बाली के साथ युद्ध करते हुए प्रतिद्वंदी का आधा बल उसमें आ जाने का कोई वर्णन नहीं है।
- रामसेतु के निर्माण के समय किसी गिलहरी का कोई वर्णन नहीं है।
- लक्ष्मण को शक्ति रावण ने मारी थी, मेघनाद ने नहीं।
- अहिरावण, महिरावण, पंचमुखी हनुमान, मकरध्वज का कोई वर्णन दोनों ग्रंथों में नहीं है।

- मृत्यु के समय लक्ष्मण द्वारा रावण से शिक्षा लेने का कोई प्रसंग नहीं है।
- वाल्मीकि रामायण में रावण के मरने का प्रसंग साधारण है जबकि रामचरितमानस में रावण मरते समय श्रीराम का उद्घोष करता है।
- मंदोदरी का विभीषण से विवाह का प्रसंग भी कही नहीं है।
- सुलोचना के पास मेघनाद का सर गिरना और उसे लक्ष्मण का माहात्म्य बताने का कोई वर्णन नहीं है।
- अयोध्या में कर प्राप्त करने के लिए धर्म कांटे के निर्माण का कोई वर्णन नहीं है।
- श्रीराम द्वारा पतंग उड़ाना, उसके सहारे हनुमान का स्वर्गलोग तक चले जाने का कोई वर्णन दोनों ग्रंथों में नहीं है।
- श्रीराम की मुद्रिका छिद्र में गिर जाना और हनुमान का उसे ढूंढते हुए पाताल में पहुँच जाने का कोई वर्णन नहीं है।
- युद्ध से पहले रावण का स्वयं श्रीराम के राजपुरोहित बनने का भी वर्णन किसी ग्रंथ में नही है।
- लव-कुश द्वारा अश्वमेघ यज्ञ के घोड़े को पकड़ने और फिर शत्रुघ्न, लक्ष्मण, हनुमान इत्यादि के साथ उनके युद्ध का कोई वर्णन नहीं है।

हालाँकि गोस्वामी तुलसीदास एवं रामचरतिमानस का स्थान अद्वितीय है किन्तु वाल्मीकि रामायण तो फिर भी रामायण ही है। चूँकि ये मूल ग्रन्थ है इसी कारण सबसे अधिक प्रामाणिक है। रामायण में एक और बात भी है जो इसे अद्भुत बनाती है। क्या आपको पता है कि इसके २४००० श्लोकों में हर १००० श्लोक के पहले अक्षर को मिलाएं तो इससे गायत्री मन्त्र का निर्माण होता है। है ना आश्चर्यजनक।

renaissance